सम्पर्क ♦ सहयोग ♦ संस्कार ♦ सेवा ♦ समर्पण

राष्ट्रगीतिका

राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान प्रतियोगिता

भारत विकास परिषद् प्रकाशन

Rashtradevo Bhav ❋ राष्ट्रदेवो भव

सरस्वती वंदना

हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी अंब विमल मति दे।
जग-सिरमौर बनायें भारत, वह बल-विक्रम दे।
साहस शील हृदय में भर दे, जीवन त्याग-तपोमय कर दे।
संयम सत्य स्नेह का वर दे, स्वाभिमान भर दे।। १।।
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी अंब विमल मति दे।
लव कुश ध्रुव प्रह्लाद बनें हम, मानवता का त्रास हरें हम।
सीता सावित्री दुर्गा मां! फिर घर-घर भर दे।। २।।
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी अंब! विमल मति दे।

भारत विकास परिषद्
Bharat Vikas Parishad

केंद्रीय कार्यालय:
भारत विकास भवन, बीडी ब्लाक,
पावर हाउस के पीछे, पीतमपुरा, दिल्ली-34
दूरभाष: 27313051, 27316049
फैक्स-011-27314515
ई मेल-bvp@bvpindia.com
वेबसाइट-bvpindia.com

Central Office :
Bharat Vikas Bhawan, BD Block,
Behind Power House,
Pitampura, Delhi-110 034
Ph.: 011-27313051, 27316049
Fax: 011-27314515
E-mail: bvp@bvpindia.com
Website: www.bvpindia.com

राष्ट्रगीतिका

सहयोग राशि : रुपये 12.00 मात्र

दो शब्द

संस्कृत को प्राचीन काल से देव भाषा की संज्ञा प्रदान की गई है। वस्तुत: अन्य सभी भाषाओं की जननी यदि संस्कृत को माना जाए तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्राचीनतम् वैदिक साहित्य में चार वेदों की जो गणना की जाती है उनमें सामवेद संगीत सम्बन्धी समस्त ज्ञान का संग्रह कहा जाता है। इस वेद की सभी ऋचाएं शास्त्रीय संगीत के माध्यम से लयबद्ध होकर सस्वर गायी जाती है। इसी पृष्ठभूमि में यह उचित समझा गया कि भारत विकास परिषद् सरीखी संस्था भी अपने उन संस्कारों को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए प्रयत्नशील हो, जिसकी महिमा भारतीय संस्कृति द्वारा गायी जाती है। हिन्दी गीत संरचना के साथ संस्कृत भाषा में भी समूहगान प्रचलित हो और स्कूली बच्चों में अपनी इस भाषा के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो और सव।सामान्यजन की भाषा बने। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर संस्कृत भाषा में भी इस प्रतियोगिता हेतु ''राष्ट्रगीतिका'' नाम से 32 गीतों का यह संकलन तैयार किया गया है। हमें आशा है कि हमारे इस प्रयास का भविष्य उज्ज्वल होगा।

जिन गीतकारों ने इस संकलन के लिए गीत संजोये हैं उन्हें भी मैं साधुवाद देता हूँ।

सुरेन्द्र कुमार वधवा
राष्ट्रीय महामंत्री
भारत विकास परिषद्

FOREWORD

From ancient times Sanskrit has rightly been called 'Dev Bhasha' or the language of gods. Actually Sanskrit may be designated as the mother of all the other languages. Vedas are the oldest literature of the world and among the four Vedas, Sam Veda contains all the knowledge about music. Its 'Richas' or hymns can be sung in accompaniment with musical instruments. Keeping in view all these facts it was considered appropriate that an organization like BVP should highlight and propagate the high ideals of our ancient culture and along with the NGSC of Hindi songs, there should be a competition of Sanskrit songs as well. It will create a fascination for Sanskrit among school children. For this purpose this book 'Rashtra Gitika' containing Vande Mantram and 25 Sanskrit songs, written by eminent Sanskrit poets, has been compiled. I am sure the future of this project is very bright.

I express my gratitude to all those poets whose compositions have been included in this book.

SURINDER KUMAR WADHWA
National Secretary General
Bharat Vikas Parishad

प्रस्तावना

भारत का इतिहास श्रद्धा, त्याग और साधना की कहानी है। वैदिक काल से हमारा यह विश्वास रहा है कि समाज और व्यक्ति का संबंध अटूट है। इसलिए आज़ादी के पश्चात् समर्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए सशक्त समाज की आवश्यकता को ध्यान में रखकर "भारत विकास परिषद्" जैसी संस्था की परिकल्पना सामने आई। वास्तव में भारत विकास परिषद् समाज के कुछ प्रबुद्ध और राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत सक्षम व्यक्तियों के आचार-विचारों का जीवन्त एवं व्यवहारिक परिणाम है। यह एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन है जो सर्वधर्मसंभाव और विश्वबन्धुत्व के आदर्श के प्रति समर्पित है। समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान के प्रति कार्यरत यह संस्था भारतीय संस्कृति के आधार पर भारत के विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

स्वामी विवेकानंद जी के विचारों से प्रेरणा लेकर समाज के विचारशील, समर्पित एवं उत्साही व्यक्तियों द्वारा 1963 में भारत विकास परिषद् की स्थापना की गई। दिल्ली के भूतपूर्व महापौर लाला हंसराज गुप्ता एवं डॉ. सूरज प्रकाश ने इस संस्था की नींव रखी। सुप्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा परिषद् की आजीवन संरक्षिका रहीं । सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता श्री लक्ष्मीमल्ल सिंघवी परिषद् के पथ प्रदर्शक रह चुके हैं एवं न्यायमूर्ति एम. रामा जॉयस परिषद् के संरक्षक हैं।

भारत विकास परिषद् की आस्था मातृभूमि के प्रति समर्पण और भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित है। इन मूल्यों के आधार पर इसकी छवि एवं पहचान पूरे देश में बन रही है। मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था, विचारों की स्वतंत्रता, सर्व सहमति, एकात्मकता, समरसता, सत्य, त्याग एवं समर्पण जैसे मानवीय मूल्यों के प्रति अगाध श्रद्धा एवं अनुकरणीय आचरण ही इस संस्था के लिए मार्ग दर्शक एवं दिशा निर्देश हैं। इन्हीं मूल्यों के संवर्धन के लिए सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा एवं समर्पण ये पाँच ध्येय पूर्ण प्रेरक तत्व इसके अविभाज्य अंग बन गए हैं।

1963 में दिल्ली से प्रारंभ एक शाखा से अब देश-विदेश में इसकी 1,200 शाखाओं का विशाल जाल फैला हुआ है। इसके 48,000 से अधिक सदस्य-परिवार, निःस्वार्थ सामाजिक सेवा कार्यों में जुटे हैं।

भारत विकास परिषद् के प्रमुख प्रकल्पों को दो भागों में बांटा जा सकता है।

सेवा कार्य

1. **विकलांग सहायता एवं पुनर्वास योजना :** लगभग 25000 कृत्रिम अंग ग़रीबों को भारत विकास परिषद् की शाखाओं के शिविरों के माध्यम से हर वर्ष निःशुल्क दिए जाते हैं। अभी तक 12000 विकलांगों को 26 पुनर्वास केंद्रों के माध्यम से स्वरोज़गार की व्यवस्था की गई है।
2. **वनवासी सहायता योजना :** वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के लिए लगभग 60 लाख रुपये की सहायता गतवर्ष दी गई।

INTRODUCTION

Commitment, dedication, faith and devotion embody themselves in their earnest spirit in Indian history. From the ancient age we believe that society and individuals go side by side with an unbreakable bond. Keeping this ideology in mind and determining the requirement of a strong society in order to create a capable country the concept of an organization like "Bharat Vikas Parishad" originated. Actually Bharat Vikas Parishad is an outcome of a few enlightned, highly patriotic and competent people. This is a social and cultural organisation, which is dedicated to universal brotherhood and religious harmony. Based upon Indian culture, this organisation has engaged itself in the moral and spiritual upgradation of the society.

Inspired by the ideals of Swami Vivekanand, few intellectual, energetic and dedicated personalities constituted Bharat Vikas Parishad in 1963. Former Mayor of Delhi Lala Hansraj Gupta and Dr. Suraj Prakash were the founders of the organization. Eminent writer, Mahadevi Verma was the "Lifetime Patron" of Parishad. Famous lawyer Dr. L. M. Singhvi was the guiding spirit and justice M. Rama Jois is the Patron of the Parishad.

Parishad's essence is based upon dedication towards our motherland and Indian moral values. Because of these values it has been getting recognition all over the country. The guiding spirit of the organisation is based on the firm belief in universal moral values like commitment towards humanity, freedom of thought, universal concurrence, integrity, truth, devotion and dedication. For nourishment of these morals five inspiring gems have become an integral part of the organization. These are *Sampark, Sahyog, Sanskar, Sewa* and *Samarpan.*

Starting from its only branch at Delhi in 1963 now it has a vast network of 1200 branches all over India. More than 48,000 member families are selflessly engaged in serving the society.

Activities of Bharat Vikas Parishad can broadly be divided in two parts :—

SEVA KARYA

1. **Helping the Handicaped and their Rehabilitation :** Around 29,000 artificial limbs are distributed among poor every year through various branches of Parishad. More than 12,000 handicaped persons have been provided with self-employment through rehabilitation centres.

2. **Vanvasi Sahayata Yojna :** Around 60 lakh rupees have been provided for education, health etc. of rural areas in previous year.

3. **ग्राम/बस्ती विकास योजना :** 700 गांव भारत विकास परिषद् ने गोद लिए हैं और उनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, स्वच्छ पानी की व्यवस्था, सुलभ शौचालय आदि अनेक प्रमुख कार्य चल रहे हैं।
4. **पर्यावरण एवं स्वास्थ्य :** लगभग 2 लाख वृक्ष हर वर्ष लगाए जाते हैं।
5. **अन्य प्रकल्प :** निःशुल्क डिस्पेंसरी, एम्बुलैंस, मोबाइल क्लीनिक, नेत्र चिकित्सा शिविर, रक्तदान शिविर, सामूहिक सरल विवाह आदि।

संस्कार कार्य :

1. **गुरुवंदन छात्र अभिनंदन :** हर वर्ष 18 लाख से अधिक विद्यार्थी एवं शिक्षक इसमें भाग लेते हैं।
2. **भारत को जानो प्रतियोगिता :** साधरणतया 9 लाख से अधिक प्रतिभाशाली छात्र प्रति वर्ष इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं।
3. **संस्कार शिविर :** बाल संस्कार शिविर शाखा स्तर पर, युवा संस्कार शिविर प्रांत स्तर पर, प्रौढ़ संस्कार शिविर एवं महिला संस्कार शिविर राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाते हैं।
4. **राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता :** इस प्रतियोगिता में 'चेतना के स्वर' के माध्यम सें परिषद् ने भारत के सभी हिन्दी व अहिन्दी प्रान्तों को एकसूत्र में पिरोने में सफलता प्राप्त की है। प्रतिवर्ष लगभग 4 लाख विद्यार्थी तथा 22 हज़ार विद्यालय इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं।
5. **राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान प्रतियोगिता:** छात्र वर्ग को राष्ट्र-निष्ठा के अमिट संस्कार प्रदान करने के लिए राष्ट्र-भक्ति से ओत-प्रोत समूहगीतों की उपादेयता निर्विवाद है। **संस्कृतिः संस्कृताश्रिता** अर्थात् भारतीय संस्कृति संस्कृत भाषा पर आश्रित है। अतः भारतीय संस्कृति तथा भारत राष्ट्र की एकता-अखण्डता की रक्षा के लिए संस्कृति का महत्व स्पष्ट है। 10 अक्टूबर 1994 को संस्कृत के पक्ष में दिये गये निर्णय में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य किया जाये।

संस्कृत भाषा की महत्ता को दृष्टिगत करते हुए भारत विकास परिषद् ने राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान एवं लोकगीत प्रतियोगिता को राष्ट्रीय प्रकल्प के रूप में स्वीकार किया है। राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने वाले विभिन्न प्रकार के सुन्दर तथा प्रेरक संस्कृत राष्ट्र गीतों का संकलन 'राष्ट्रगीतिका' प्रस्तुत है जो राष्ट्रगीत 'वंदेमातरम्' की परम्परा का निश्चितरूपेण निर्वहन करेगा।

-आई.डी.ओझा

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, भारत विकास परिषद्

3. **Gram Basti Vikas Yojna :** Bharat Vikas Parishad has adopted 700 villages. In these villages many need based activities such as education, health care, cleanliness, availability of drinking water, proper sanitation etc. are successfully going on.

4. **Environment and Health :** More than 2 Lakhs plants are planted every year. At least one hospital or dispensary is being run in every state.

5. **Other Activities :** Free dispensaries, mobile clinics, eye care camps, blood donation camps, group marriages etc.

SANSKAR KARYA

1. **Guruvandan Chhatra Abhinandan :** More than 18 Lakhs students and teachers participate every year.

2. **Bharat Ko Jano Competition :** Six Lakhs students take part every year in this competition.

3. **Sanskar Shivirs :** Bal Sanskar Shivirs at Branch level, Yuva Sanskar Shivirs at Prant Level and Praudh Sanskar Shivirs and Mahila Sanskar Shivirs are organized at National level.

4. **National Group Song Competition :** Through this competition the Parishad has successfully forged unity among the Hindi & Non Hindi States. Every year more than 5 Lakhs students participate in this competition.

5. **National Sanskrit Group Song Competition:** In cultivating a feeling of nationalism and in giving sanskars to the youth of the country the role of songs is undisputed. Sanskrit is an integral part of Indian culture. In a judgment given on 10th October, 1994 the Supreme Court emphasised that the study of Sanskrit language should be made compulsory to bring back the glory of our ancient culture.

   Keeping in view the above facts the Parishad has accepted **'National Sanskrit Group Song Competition'** as a National Project. I hope astrology will carry on further the tradition laid down by the Rashtra Geet Vandemataram.

I.D. Ojha
National Working President
Bharat Vikas Parishad

भारत विकास परिषद्

भारतीय संस्कृत समूह गान प्रतियोगिता

स्वतंत्रता से पूर्व वन्देमातरम द्वारा हमारे देश वासियों ने जन-जन में देशभक्ति का शंख बजाया और देश स्वतंत्र हुआ। आज के समय में जब पाश्चात्य संस्कृति के बादल हमारी संस्कृति पर कुठाराघात कर रहे हैं जिससे इसकी महत्ता और अधिक बढ़ गई है। आनेवाले भारत के कर्णधार हमारे नन्ने-मुन्ने बालक एवं बालिकाओं में देशभक्ति के भाव जगाना आवश्यक हो गया है। "हर विद्यालय एवं महा विद्यालय में देशभक्ति के गीत गूंजे" इसी भाव को ध्यान में रखकर यह प्रकल्प इस वर्ष से राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने का निश्चय किया गया है, यद्यपि यह प्रतियोगिता कई वर्षों से शाखा एवं प्रान्त स्तर पर सफलतापूर्वक आयोजित की जा रही है।

यह प्रतियोगिता हमारे युवा विद्यार्थियों के लिये होगी। पहला राष्ट्रीय गीत संस्कृत भाषा में अनिवार्य होगा तथा दूसरा गीत लोकगीत (जो भारत के किसी भी प्रान्त की लोक कला के आधार पर हो) गाया जा सकता है। दूसरा गीत स्वेच्छा के आधार पर रहेगा। दोनों गीतों की प्रतियोगिता साथ-साथ होगी।

यह प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी

1. शाखा स्तर की प्रतियोगिता :- इस प्रतियोगिता को लोकप्रिय बनाने हेतु अगस्त माह में इसका आयोजन करना चाहिए। संस्कृत गीत की प्रतियोगिता के साथ लोकगीत प्रतियोगिता आयोजित हो सकती है जो कि एच्छिक होगी। संस्कृत गीत में प्रथम स्थान पाने वाली टोली ही प्रान्तीय स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में भाग ले सकेगी।

2. प्रान्त स्तर की प्रतियोगिता :- इस स्तर पर यह प्रतियोगिता अक्टूबर मास तक सम्पन्न हो जानी चाहिए। शाखा स्तर से संस्कृत गीत में प्रथम आयी हुई टीम ही भाग ले सकेगी। इस स्तर पर भी लोकगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया जा सकता है, जो कि एच्छिक होगी। प्रान्तीय स्तर पर संस्कृत गीत में प्रथम आने वाली टोली ही राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में भाग ले सकेगी।

3. राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता :- प्रान्त स्तर पर संस्कृत गीतों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली टोली ही इस प्रतियोगिता में भाग ले सकेगी। इस स्तर पर भी लोकगीत प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसमें प्रान्त स्तर पर संस्कृत गीतों में प्रथम स्थान पाने वाली टोली के ही विद्यार्थी भाग ले सकेंगे, पृथक रूप से अन्य कोई टोली स्वीकार्य नहीं होगी।

प्रतियोगी कौन?

- इस प्रतियोगिता में कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी भाग ले सकेंगे।
- इस प्रतियोगिता में संगीत विद्यालयों का प्रवेश वर्जित है।

प्रतियोगिता का स्वरूप एवं नियम

1. इस प्रतियोगिता के सभी गीत समूह में गाये जायेंगे।
2. इस प्रतियोगिता में प्रत्येक टोली को परिषद् द्वारा संस्कृत गीतों की चयनित "राष्ट्रगीतिका पुस्तक" से ही लिया गया सम्पूर्ण गीत (बिना किसी अंश को जोड़े या छोड़े) निश्चित समय में प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
3. एक टोली में गायकों की संख्या 6 से 8 (छात्र/छात्राएं या दोनों) होनी चाहिए।

Bharat Vikas Parishad

National Sanskrit Group Song Competition

During our struggle for freedom 'Vande Mantram' was our marching song. But after Independence, western culture has invaded us and hence the importance of this song has increased manifold. It has become imperative to inculcate the feelings of nationalism in the hearts of our children who are the future leaders of our country. Though the Prants and branches were organizing this competition at their levels for the last several years but to make it a countrywide event it became necessary to make it a national project.

This competition is meant for our young students. The first song will be a patriotic song in Sanskrit and the second will be a folk song based on the folk art of any State. The second song is optional. The competition for both the songs will be held simultaneously.

THE THREE LEVEL COMPETITION

1. **At branch Level-**To make the competition more popular it should be held in the month of August. The teams standing first in sanskrit competition will participate in Prant level competition. The teams getting first, second and third positions will be given prizes.
2. **At Prant Level-**The teams standing first in Sanskrit Competetion the branch level will participate in the Prant level competition. This competition should be held in the month of September.
3. **At National Level-**The teams standing first in both the competitions at Prant level will participate in the national level competition. If due to unavoidable circumstances the team standing first is unable to participate, the team getting second position may participate in the event. But such information should be given to the National Convener before hand. Both the songs should be sung by the same team and another team will not be recognized.

Who can Compete?

- All the students from class 6th to 12th are eligible for the competition.
- The schools exclusively teaching music are not eligible for this competition.

The Rules and Regulations for the competition.

1. All the songs in the competition will be sung by the team.
2. In this Competition every team has to present a complete song (without adding and deleating any part) within the stipulated time.
3. The number of students (Girls/Boys or Both) in a team will be minimum six and maximum eight.

4. संस्कृत गीत के प्रस्तुतीकरण के समय गीत के भावानुसार शरीर के हाव-भाव के प्रदर्शन की अनुमति होगी, परन्तु स्थान बदलना वर्जित होगा। लोक गीत प्रतियोगिता में स्थान बदलने की अनुमति होगी।

5. भाग लेने वाली टोली वादक व वाद्य यंत्र अपने साथ लायेंगी। वाद्य यंत्र एवं वादकों में से प्रत्येक की अधिकतम संख्या तीन होगी। कोई भी विद्युत या बैटरी चलित यंत्र प्रयोग में नहीं लाया जा सकेगा। इन वाद्य यंत्रों के प्रयोग हेतु वादकों की संख्या, गीत गाने वाले विद्यार्थियों से अलग होगी।

6. अधिकतम प्राप्तांक की संख्या 120 होगी। ये अंक निम्न रूप से 20-20 के अंशों में बांटे जाएंगे: संगीत संयोजना (Music Composition) वेष-भूषा, स्वर, ताल, उच्चारण एवं प्रस्तुतीकरण का ढंग।

7. प्रत्येक टोली को गीत प्रस्तुत करने के लिए अधिकतम सात मिनट का समय दिया जाएगा। इस अवधि की गणना गीत या संगीत जो भी पहले आरम्भ होगा, उससे की जाएगी। अधिक समय लेने पर पांच अंक काटे जाएंगे।

8. दोनों प्रतियोगिताओं में ध्वनिवर्धक यंत्र (Loud speaker) का प्रयोग किया जा सकता है।

9. प्रतियोगिता में फिल्मी धुनों अथवा व्यवसायिक रिकार्डों की संगीत रचनाओं का प्रयोग निषिद्ध है। वे स्वर रचनाएं अच्छी समझी जाएंगी जो शास्त्रीय संगीत से प्रेरित या लोक कला पर आधारित होंगी।

10. प्रतियोगिता के कुछ समय पूर्व टोलियों के प्रमुखों (Team leaders) को एक विशेष बैठक में बुलाया जाएगा, जिसमें आयोजक समिति के संयोजक द्वारा सभी के सामने गीत प्रस्तुतीकरण के क्रम आदि का निर्णय लिया जाएगा। संयोजक का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा।

11. निर्णायक मण्डल में अनुभवी संगीतज्ञ, कला विशेषज्ञ व भाषा विद्वान होंगे। परिषद् द्वारा घोषित माननीय निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

12. राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक टोली के साथ विद्यालय के एक शिक्षक को संरक्षक के रूप में व प्रान्तीय अध्यक्ष/महासचिव/कोषाध्यक्ष/प्रान्तीय संयोजक में से एक पदाधिकारी को टोली के साथ आना अनिवार्य होगा। इससे अधिक आने वाले प्रत्येक सदस्य को प्रतिदिन प्रति व्यक्ति के हिसाब से रु. 500/- का अतिरिक्त शुल्क दोना होगा।

13. सभी टोलियों को पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित रहना अनिवार्य होगा।

14. प्रतियोगिता में भाग लेते समय प्रत्येक टोली को किसी भी प्रकार की वेश-भूषा पहनने की अनुमति है, परन्तु विंद्यालय का बैज/बैल्ट, संकेत-चिन्ह का प्रयोग करना वर्जित है।

15. पुरस्कार वितरण समारोह में कुछ टोलियों का प्रदर्शन प्रतियोगिता में पहनी हुई वेश-भूषा में ही दोबारा होगा।

4. While singing the Sanskrit song expression of emotions through body movement is permissible but change of place will not be allowed. **But during the singing of folk song change of place will be allowed.**

5. The participating team will bring its own instruments. The number of instruments and the players will not exceed three. No instrument run by electricity or battery will be allowed. The number of instrument players will be separate from the members of the team singing songs.

6. The maximum marks given to a team will be 120. These will be divided equally in six parts of twenty each and will be awarded for dress, voice, rhythm, pronunciation, method of presentation and music composition.

7. Each team will be given a maximum time of seven minutes for presentation. The time will be counted from the start of music or song whichever starts first. The teams exceeding time limit will loose five marks.

8. Use of loud speakers will be allowed for both the competitions.

9. Use of film tunes or commercial records is prohibited in the competition. The song tunes based on classical music or folk songs will be appreciated.

10. Before the competition starts a meeting of the team leaders will be called and decisions will be taken regarding the sequence of the teams in which they will be called to perform. The decision of the convener will be final and must be obeyed by all.

11. The panel of judges will be experienced musicians, specialists in arts and scholars of languages. The result declared by the judges and endorsed by the Parishad will be the final.

12. A teacher from the institution must accompany the teacher as guardian and from the Prant President/General Secy./Treasurer/Convener only one of them must come. Extra member will have to pay Rs. 500/- per member per day.

13. All the teams will remain present at the time of prize distribution.

14. The team will be allowed to wear any type of dress at the time of presentation but no badge, belt or other indicator disclosing the name of the school will be allowed.

15. The performance of some of the teams in the same uniform will be repeated in the prize distribution ceremony.

16. प्रस्तुति के समय टोली के सदस्यों को मंच पर जूते पहनकर जाने की अनुमति नहीं होगी।

17. लोकगीत प्रतियोगिता हेतु गीत की प्रतिलिपि भावार्थ सहित हिन्दी या अंग्रेजी में कार्यक्रम संयोजक के पास प्रतियोगिता से पूर्व जमा कराना अनिवार्य होगा।

18. संयोजन समिति को राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान एवं लोकगीत प्रतियोगिता से सम्बन्धित किसी भी विषय में निर्णय लेने का पूर्ण अधिकार होगा। आवश्यकता पड़ने पर यह समिति बिना पूर्व सूचना दिये स्थान, समय, तिथि व कार्यक्रम आदि में फेर-बदल कर सकती है तथा उसे किसी भी प्रतियोगी/टोली के प्रदर्शन को रद्द करने या रोक देने का अधिकार होगा।

पुरस्कार एवं सम्मान

19. दोनों प्रतियोगिताओं की विजेता टोलियों के लिए अलग-अलग पुरस्कार होंगे।
20. दोनों प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान प्राप्त करने वाली टोलियों को पुरस्कृत किया जाएगा।
21. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र दिया जायेगा।
22. प्रतियोगिता में आने वाली टोलियों को आने-जाने का किराया व सम्बन्धित व्यय स्वयं वहन करना होगा, परन्तु टोली को भेजने का दायित्व प्रान्त का होगा।
23. प्रतियोगिता में आने वाली टोलियों की खाने-पीने व रहने की व्यवस्था आयोजन समिति करेगी।
24. प्रतियोगिता में आने वाली टोलियों को अपने आने की सूचना प्रतियोगिता से 15 दिन पूर्व कार्यक्रम संयोजक को देनी होगी।
25. राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने वाली टोली प्रवेश-पत्र के साथ प्रवेश शुल्क के रूप में रु. 500/- की राशि का भुगतान नगद अथवा बैंक ड्राफ्ट के द्वारा करेगी। ड्राफ्ट भारत विकास परिषद (आयोजन स्थान) के पक्ष में देय होगा।
26. किसी प्रकार की प्रतियोगिता सम्बन्धी या अन्य जानकारी हेतु केन्द्रीय कार्यालय, राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान एवं लोकगीत प्रतियोगिता राष्ट्रीय मंत्री या राष्ट्रीय संयोजक से सम्पर्क कर सकते हैं।

डॉ॰ एस. के.जैन
वाइस चेयरमैन
राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान एवं
लोकगीत प्रतियोगिता
फ्लैट नं. 702, सुमेर एपार्टमेंट,
शंकर धनेकर रोड, मुम्बई-400016
दूरभाष : 022-24329360

कवल साहनी
राष्ट्रीय मंत्री
राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान एवं
लोकगीत प्रतियोगिता
एन-50, किदवई नगर,
कानपुर-208011 (उ.प्र.)
मोबाइल : 93353-80193

16. Shoes will not be allowed on the stage at the time of performance.

17. A copy of the folk song with its gist in Hindi or English will have to be submitted to the convener before the competition.

18. The Orgnaising Committee will have full authority for taking any decision regarding the competition. The date, place, time, and the programme may be changed without any prior information and the performance of any team may be stopped or cancelled.

Prizes and Honours

19. Separate prizes will be given to the winning teams in both the competitions.

20. In both competetions the 1st, 2nd, 3rd and the 4th team will be rewarded.

21. Certificates will be awarded to all the participants.

22. The teams coming for participation will bear their own travelling and other expenses. But the responsibility of sending the team will be of the Prant.

23. The organizing committee will make arrangements for boarding and lodging of the teams without any charge.

24. The participating teams will give information regarding the date and time of their arrival at least fifteen days in advance.

25. The teams participating at national level will have to send a demand draft of Rs. 500/- in the name of Bharat Vikas Parishad (where organized) payable at that place.

26. For any other information regarding the above competitions contact Central Office Delhi, the National Secretary or the National Convener of National Sanskrit Group Song & Folk Songs competition.

Chander Sain Jain
Project Chairman
National Sanskrit Group Song and
Folk Song Competition
Flat No. 702, Sumer Apartment,
Shankar Dhankar Road, Mumbai-400016
Phone : 022-24329360

Kaval Sahni
National Secretary
National Sanskrit Group Song and
Folk Song Competition
N-50, Kidwai Nagar,
Kanpur-208011 (U.P.)
Mobile: 93353-80193

अनुक्रमणिका

वन्दे मातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य-श्यामलाम् मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥ १ ॥
शुभ्र-ज्योत्सनां पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर-भाषिणीम्।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥ २ ॥
कोटि-कोटि कंठ कल-कल निनाद कराले
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
अबला केनो माँ एतो बले
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीम् मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥ ३ ॥
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहु ते तुमि मां शक्ति
हृदये तुमि मां भक्ति
तोमारइ प्रतिमा गड़ि मंदिरे मंदिरे ॥ वन्दे मातरम्॥ ४ ॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणीम्
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वां, नमामि कमलाम्।
अमलाम्, अतुलाम्, सुजलाम्, सुफलाम्, मातरम्॥ ५ ॥
श्यामलाम्, सरलाम्, सुस्मिताम्, भूषिताम्
धरणीम्, भरणीम्, मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥ ६ ॥

जय भारत जननी

भारतमाता बुधजनगीता
निर्मलगंगा-जलपूता ॥
शिरसि विराजित-हिमगिरिमुकुटम्
चरणे हिन्दु-महोदधि-सलिलम्
जघने शस्य-लता तरु-वसनम्
जय भारतजननी ॥ १ ॥

ऋषिवर-घोषित-मन्त्र-पुलकिता
कविवर-गुम्फित-पावन-चरिता
धीर-वीर-नृप-शौर्य-पालिता
जय भारतजननी ॥ २ ॥

मनसि मे सदा तव पदयुगलम्
संस्कृत-संस्कृति-सतत-चिन्तनम्
भाव-राग-लय-ताल-मेलनम्
जय भारतजननी ॥ ३ ॥

अमृतस्य पुत्रा वयम्

अमृतस्य पुत्रा वयं
सबलं सदयं नो हृदयम् ॥

गतमितिहासं पुनरुन्नेतुं
युवसंघटनं नवमिह कर्तुम् ॥
भारतकीर्तिं दिशि दिशि नेतुं
दृढसंकल्पा विपदि विजेतुम् ॥१॥

ऋषिसन्देशं जगति नयेम
सत्त्वशालिनो मनसि भवेम।
कष्टसमुद्रं सपदि तरेम
स्वीकृतकार्यं न हि त्यजेम ॥२॥

दीनजनानां दुःखविमुक्तिं
महतां विषये निर्मलभक्तिम् ॥
सेवाकार्ये सन्ततशक्तिं
सदा भजेम भगवति रक्तिम् ॥३॥

–गु० गणपय्यहोळ्ळ:

एहि रे समर्पयेम

एहि रे ऽऽ
एहि रे समर्पयेम मित्र! मातृचरणयोः
तनुतृणं धनचयं, भवतु रुधिरतर्पणम्।
किं नु पश्यसि त्वदीय-मातृ-वदन-म्लानतां
किमु ह्रिया, त्यज भियं, विक्लवः किमर्पण॥ एहि रे॥

मलयमारुतस्त्वदीयस्वागतं विधास्यति
सनातनी परम्परा प्रेरिका भविष्यति।
भवेम धन्यजीविनः समानचिन्तका वयं
चल पुरः, सह मया, समाश्रय ध्रुवां धृतिम्॥ एहि रे॥

वीरसूः शूरभूः स्थैर्यधैर्यभूरियं
सखे न भीरुभूरियं न भोगलालसास्पदम्।
नरोऽप्यवाप्तुमर्हतीह देवता-समानतां
स्मर चिरं, भर धियं, साधयेम विक्रमम्॥ एहि रे॥

राष्ट्रमुद्धर्तुमेहि ध्येय-साधनव्रत!
मन्युरस्तु बलिपशुः कार्यदीक्षितो भव।
धर्मसक्त कर्मनिष्ठ ऋषिकुलोभ्द्भव सखे
धर धुरं, दृढ़मते, याम ध्येयसिद्धये॥ एहि रे॥

–श्री जर्नादन हेगडे

भारतधरणीयं मामकजननीयम्

भुवमवतीर्णा नाकस्पर्धिनी
भारतधरणीयं, मामकजननीयम् ॥
शिरसि हिमालय–मुकुट–विराजिता
पादेजलधिजलेन परिप्लुता
मध्ये गंगापरिसरपूता
भारतधरणीयं, मामकजननीयम् ॥ भुवमवतीर्णा ॥

काश्मीरेषु च वर्षति तुहिनम्
राजस्थाने प्रदहति पुलिनम्
मलयस्थाने वाति सुपवनः
भारतधरणीयं, मामकजननीयम् ॥ भुवमवतीर्णा ॥

नानाभाषि–जनाश्रय–दात्री
विविध–मतानां पोषणकर्त्री
नानातीर्थ–क्षेत्रसावित्री
भारतधरणीयं,मामकजननीयम् ॥ भुवमवतीर्णा ॥

पुण्यवतामियमेव हि नाकः
पुण्यजनानां रुद्रपिनाकः
पुण्यपराणामाश्रयलोकः
भारतधरणीयं, मामकजननीयम् ॥भुवमवतीर्णा ॥

–श्री जि. महाबलेश्वरभट्टः

मृदपि च चन्दनम्

मृदपि च चन्दनमस्मिन् देशे ग्रामो ग्रामः सिद्धवनम्।
यत्र च बाला देवीरूपा बालाः सर्वे श्रीरामाः॥
हरिमन्दिरमिदमखिलशरीरम्
धनशक्ती जनसेवायै
यत्र च क्रीडायै वनराजः
धेनुर्माता परमशिवा॥

नित्यं प्रातः शिवगुणगानं
दीपनुतिः खलु शत्रुपरा॥ ॥मृदपि॥

भाग्यविधायि निजार्जितकर्म
यत्र श्रमः श्रियमर्जयति।
त्यागधनानां तपोनिधीनां
गाथां गायति कविवाणी

गंगाजलमिव नित्यनिर्मलं
ज्ञानं शंसति यतिवाणी॥ ॥मृदपि॥

यत्र हि नैव स्वदेहविमोहः
युद्धरतानां वीराणाम्।
यत्र हि कृषकः कार्यरतः सन्
पश्यति जीवनसाफल्यम्

जीवनलक्ष्यं न हि धनपदवी
यत्र च परशिवपदसेवा॥ ॥मृदपि॥

–श्री जर्नादन हेगडे

वन्दे भारतमातरम्

वन्दे भारतमातरं वद, भारत। वन्दे मातरम्

वन्दे मातरं, वन्दे मातरं, वन्दे मातरम्॥

जन्मभूरियं वीरवराणां त्यागधनानां धीराणामम्
मातृभूमये लोकहिताय च नित्यसमर्पितचित्तानाम्।
जितकोपानां कृतकृत्यानां वित्तं तृणवद् दृष्टवताम्
मातृसेवनादात्मजीवने सार्थकतामानीतवताम्॥१॥

ग्रामे ग्रामे कर्मदेशिकास्तत्त्ववेदिनो धर्मरताः
अर्थसंचयस्त्यागहेतुको धर्मसम्मत कामस्त्विह।
नश्वरबुद्धिः क्षणपरिवर्तिनि काये, चात्मन्यादरधीः
जातो यत्र हि स्वस्य जन्मना धन्यं मन्यत आत्मानम्॥२॥

मातस्त्वत्तो वित्तं चित्तं स्वत्वं प्रतिभा देहबलम्
नाहं कर्ता, कारयसि त्वं, निःस्पृहता मम कर्मफले।
अर्पितमेतज्जीवनपुष्पं मातस्तव शुभपादतले
नान्यो मन्त्रो नान्यचिन्तनं नान्यद्देशहिताद्धि ऋते॥३॥

–श्री जर्नादन हेगडे

जयतु जननी

जयतु जननी जन्मभूमिः पुण्यभुवनं भारतम्।
जयतु जम्बू-द्वीपमखिलं सुन्दरं धामामृतम्।
पुण्यभुवनं भारतम्॥

धरित्रीयं सर्वदात्री शस्यसुफला शाश्वती।
रत्नगर्भा कामधेनुः कल्पवल्ली भास्वती।
विन्ध्य-भूषा सिन्धु-रशना शिखा-हिमगिरि शर्मदा।
रम्य-गंगा-यमुनया सह महानद्यथ नर्मदा।
कर्म-तपसां सार्थ-तीर्थं प्रकृति-विभवालंकृतम्॥ जयतु... ॥

आकुमारी-हिमगिरेर्नो लभ्यते सा सभ्यता।
एक-मातुः सुताः सर्वे भाति दिव्या भव्यता।
यत्र भाषा-वेष-भूषा-रीति-चलनैर्विविधता।
तथाप्येका ह्यद्वितीया राजते जातीयता।
ऐक्य-मैत्री-साम्य-सूत्रं परम्परया सम्भृतम्॥ जयतु... ॥

आत्मशिक्षा-ब्रह्मदीक्षा-ज्ञानदीपैरुज्ज्वलम्।
योग-भोग-त्याग-सेवा-शान्ति-सुगुणैः पुष्कलम्।
यत् त्रिरंग ध्वजं विदधत् वर्षमार्षं विजयते।
सार्वभौमं लोकतन्त्रं धर्मराष्ट्रं गीयते।
मानवानां-प्रेमगीतं विबुध-हृदये झंकृतम्॥ जयतु... ॥

-हरेकृष्णमेहेरः

भारतधरणी

सर्वेषां नो जननी
भारतधरणी कल्पलतेयम्
जननी-वत्सल-तनय-गणैस्तत्
सम्यक् शर्म विधेयम् ॥ ध्रुवम् ॥

हिमगिरि-सीमन्तित-मस्तकमिदम्
अम्बुधि-परिगत-पार्वम्
अस्मज्जन्मदमन्नदमनिशं
श्रौतपुरातनमार्षम् ॥१ ॥

विजनितहर्षं भारतवर्षं
विश्वोत्कर्षनिदानम्
भारतशर्मणि कृतमस्माभिः
नवमिदमैक्यविधानम् ॥२ ॥

भारतहित-सम्पादनमेव हि
कार्यं त्विष्टविपाकम्
भारतवर्जं न किमपि कार्यं
निश्चितमित्यस्माकम् ॥३ ॥

भारतमेका गतिरस्माकं
नापरास्ति भुवि नाम।
सर्वादौ हृदयेन च मनसा
भारतमेव नमाम ॥४ ॥

-राधानाथराय्

शादरं समीहताम्

सादरं समीहताम् वन्दना विधीयताम्
श्रद्धया स्वामातृभू–समर्चना विधीयताम्॥

आपदो भवन्तु वा, विद्युतो लसन्तु वा
आयुधानि भूरिशोऽपि मस्तके पतन्तु वा
धीरता न हीयतां, वीरता विधीयतां
निर्भयेन चेतसा पदं पुरो निधीयताम्॥ सादरं॥

प्राणदायिनी मुदा त्राणदायिनी सदा
इयं सुधाप्रदायिनी शक्तिमुक्तिभक्तिदा
एतदीयवन्दने सेवनेऽभिनन्दने
साभिमानमात्मनो जीवनं प्रदीयताम्॥ ॥ सादरं॥

श्री वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

कृत्वा नवदृढसंकल्पम्

कृत्वा नवदृढसंकल्पम्
वितरन्तो नवसन्देशम्
घटयामो नवसंघटनम्
रचयामो नवमितिहासम् ॥

नवमन्वन्तरशिल्पिनः
राष्ट्रसमुन्नतिकांक्षिणः
त्यागधनाः कार्यैकरताः
कृतिनिपुणाः वयमविषण्णाः ॥ ॥ कृत्वा ॥

भेदभावनां निरासयन्तः
दीनदरिद्रान् समुद्धरन्तः
दुःखवितसान् समाश्वसन्तः
कृतसंकल्पान् सदा स्मरन्तः ॥ ॥ कृत्वा ॥

प्रगतिपथान्नहि विचलेम
परम्परां संरक्षेम
समोत्साहिनो निरुद्वेगिनो
नित्यनिरन्तरगतिशीलाः ॥ कृत्वा ॥

श्री जनार्दन हेगडे

हिमगिरेः श्रृंगम्

हिमगिरेः श्रृंगम् देवनदीं गंगाम्
मनसि निधाय हि अनुभवाम्
अनुपममुत्तुंगं भावमनुपममुत्तुंगम्॥

दिव्य–सनातन–संस्कृतिः
यतो हि वेदपुराणानि।
हिन्दोरुन्नत्यवनत्योः
सदृशनिऽगिरिशिखराणि।
भीरुमनस्स्वपि धीरस्वभावं
जनयेयुर्हिमभवनानि ॥ हिमगिरेः ॥

तं सुरलोकमतिक्रम्य
अवतीर्णा या भागीरथी।
भारतमातुः संगेन
पुण्या जाता भाग्यवती।
हिन्दूदेशे प्रतिजनमनसः
पावनकारिणी पुण्यवती ॥ हिमगिरेः ॥

पराजयोऽपि सोपानं
धैर्य विजयस्य निदानम्
गच्छतु दुःखित–बन्धुभ्यो
वक्तुं धैर्य–समाधानम्।
मातुः गौरवपरिरक्षायै
निष्ठं तनुहृद्धनप्राणम् ॥ हिमगिरेः ॥

–श्री नारायणभट्टः

मनसा सततं स्मरणीयम्

मनसा सततं स्मरणीयम्
वचसा सततं वदनीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥ लोकहितं ॥

न भोग भवने भवनीयम्
न च सुख शयने शयनीयम्
अहर्निशं जागरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥ मनसा ॥

न जातु दुःखं गणनीयम्
न च निजसौख्यं मननीयम्
कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥ मनसा ॥

दुःखसागरे तरणीयम्
कष्टपर्वते चरणीयम्
विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥ मनसा ॥

गहनारण्ये घनान्धकारे
बन्धुजना ये स्थिता गह्वरे
तत्रा मया संचरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥ मनसा ॥

देवि देहिनो बलं

देवि देहिनो बलं
धैर्य वीर्य संबलं
राष्ट्र मान वर्धनाय
पुण्य कर्म कौशलं ॥ देवि देही ॥

चण्ड मुण्ड नाशिनि
ब्रह्म शांति वर्षिणि
तेजोसाते जातं नाशं
आसु दुःख यामिनिं
भातु धर्म भास्करं
सत्य सौर्य भास्वरं
आर्य शक्ति पुष्टमस्तु
भारतम् निर्गलम ॥ देवि देही ॥

साधु वृन्द पालिके
विश्व धात्रि कालिके
दैत्य दर्प ताप ताप
कालिके करालिके
रक्ष आर्य संस्कृतिं
वर्धयार्य संहतिं
वेदमंत्रपुष्टमस्तु
भारतम् समुल्तुलम् ॥ देवि देही ॥

राष्ट्ररक्षणम्

रक्षणं-रक्षणं राष्ट्ररक्षणम्।
रक्षणं-रक्षणं देशरक्षणम्॥
रक्षणम् ...ऽऽऽऽ राष्ट्ररक्षणम्-2

गणतन्त्रमस्माकमेतद् भारतं प्रचक्षते,
देवतात्मास्वरूपं महद् रूपे दृश्यते।
युक्त आर्यमर्यादया देशेषु यः पूज्यते,
नौमि भारतभू धरां वसुन्धरा विराजते। (१)

वन्दनीयः पूजनीयो जगत्यस्मिन् सर्वदा,
अस्ति-अस्य भूमिर्वसुप्रदायिनी सदा।
सभ्यतायाः सूर्योदयः नासीत् संसारे ,यदा,
विश्वगुरुगौरवेण यो ज्ञायते तदा॥ (२)

यत्र हरिणा कृष्णेन गीताज्ञानामृतं दत्तम्,
रामचन्द्रप्रभुणा लोकधर्म तत्र स्थापितम्।
पूजायोग्या नियमाः सन्ति अस्याः संस्कृते.,
धारणीयो माननीयो धर्मः तत्र वर्तते॥ (३)

ज्ञानस्य प्रकाशो भवेत् तमो अपसरः,
वर्धतां वैभवमस्य कीर्तिः सुकीतिश्च।
भवगुरु स्वर्णविहंगः अयं भवेत् पुनः,
एहि-एहि अस्य पुनस्संगठनं कुर्मः। (४)
रक्षणम् ऽऽऽऽ राष्ट्ररक्षणम्
रक्षणम् ऽऽऽऽ देशरक्षणम्

— नरपत कविया
संस्कृताचार्यः

संस्कृतिः

श्रोतस्मार्तपथानुगैर्द्विजवरैर्यज्ञाग्निना पाविता,
गंगायाः शुचिनाम्बुना शिरसि या प्रेम्णाऽभिषिक्ता तथा।
सर्वेषां हितकारिणी मुनिजनैः शुद्धात्मना भाविता,
दिव्यासंकरताप्रभावरहिता शुद्धास्ति नः संस्कृतिः ॥१॥

नानाशास्त्रसुधीन्द्रसाधुवचनैर्व्यापारिता भूतले,
पूज्यैस्तापसपुंगवैश्चयतिभिः संप्रेरिता विश्वतः।
यस्याः सौरभभावितश्च तिलकं भाले भुवो भासते,
सेयं कस्य सुधोपमा न कुरुते प्रह्लादनं संस्कृतिः ॥२॥

निस्पन्दा ह्युटजान्तरे द्युतिमती स्नेहेन संवर्धिता,
यस्या दीप्तिकृतेऽचरंश्च शलभा नैके प्रभालोलुपाः।
यद् भासा मुनयः प्रबोधनिधयः स्वां लेखनीं प्रेरयन्,
सा वै दीपशिखापि विश्वधरणीध्वान्तापहा संस्कृति ॥३॥

कण्वस्याश्रमकन्यकेव सरला स्निग्धा मृगाणां सखी
वन्यानां नववल्लरीविटपिनां हृद्या सजातेव या।
लावण्येन धरापतेरपि मनःसंकर्षिणी शालिनी,
वीराम्बा भरतस्य तापसभुवः श्रीसंभवा संस्कृतिः ॥४॥

ब्रह्मानन्दसहोदराऽतिविरता या नश्वरे भौतिके,
सिद्धा कर्मणि धार्मिके श्रुतिमते पापे सदाऽवाड्मुखी।
भ्रूभंगे प्रलयः स्मितेऽमृतचयो यस्या अपि प्रेक्षितः।
पूज्या पुण्यपयोधिजेव ललिता दिव्यास्ति नः संस्कृति।॥५॥

सौम्या या शरणागतस्य सततं संरक्षणे सर्वथा
चण्डाक्षी दनुजोदये सुजनतासंतापसंस्कारके।
वात्सल्यामृतवाहिनी च जननीभक्तात्मजानां कृते।
धर्मत्राणपरा सदाशिवयुता भव्यास्ति नः संस्कृति ॥६॥

—*श्रीरामः दवे जोधपुरम्*

प्राणपणनस्याऽभिलाषा

(सरफ़रोशी की तमन्ना)

प्राणपणनस्याभिलाषा सांप्रतम् मम मानसे।
प्रेक्ष्यतांन्तु कियद् बलं, हन्तर्भुजायां स्फूर्जति ॥ १ ॥

राष्ट्रधर्म बलिप्रदायिन्! तुभ्यमर्पित जीवनम्।
शत्रुसंसदि शौर्यचर्चाऽद्य, त्वदीयोज्जृम्भते ॥ २ ॥

प्रेमवीथीनिदर्शकाः त्याज्यं न लक्ष्यं वर्त्मनि।
इष्टगन्तव्ये सुदूरे नेतृकर्मरसो भृशम् ॥ ३ ॥

आह्वयन् बध्यस्थले बधिकः पुनश्चाक्रोशति,
प्राणदानस्याभिलाषाऽद्यापि कस्मिन् शिष्यते ॥ ४ ॥

युक्तकाले ननु सकृत्य गुंजयिष्यामो नभः,
साम्प्रतं न विकत्थीनीयम् किं नु हृदये वर्तते ॥ ५ ॥

उत्सुकत्वं पूर्ववत् हृदये न सम्प्रति कामना,
उत्कटेच्छा राष्ट्रहितबलिदानमात्र बिस्मिले ॥ ६ ॥

पीडयस्व यथेच्छमेव पश्य सुष्ठु परन्त्विदम्,
कोऽपि बलिदानेप्सुरन्यस्ते सभायां मादृशः ॥ ७ ॥

--डॉ. नलिनी शुक्ल

विज्ञान गीतम्

भारत राष्ट्रे परमर्षीणा विज्ञानं विजयताम्,
विज्ञानं विजयताम्।

पांचभौतिकं रहस्यजातं ऋतम्भराप्रज्ञया वीक्षितम्।
निगमागम मन्त्रेषुसंचितं पुरातनं यत् यत् सनातनम्॥ १॥
पुनरपि विद्योतताम्।

अन्तरिक्षगतभगणज्ञानं, जलनिधितलगतसृष्टिज्ञानम्।
परमाणूनामन्तर्ज्ञानं, सकललोकहितसुखार्थमनिशम्॥ २॥
भुवने प्रकाशताम्।

कणादसुश्रुतपतंजलीनां, ब्रह्मगुप्तभास्करादिकानाम्।
ज्ञाननिधीनां विबुधवराणां, सत्यसनातनतत्वदर्शिनाम्॥ ३॥
परम्परा वर्धताम्।

भारतस्य यत् जगतुरुपदं अनादिसिद्धं भूषणास्पदम्।
राष्ट्रमण्डले पूजनास्पदं विद्याव्रतपालनैरखण्डम्॥ ४॥
पुनरपि संस्थाप्यताम्।

देववाणी-गीतम्

गेहे गेहे संस्कृभाषा भवतात् पुनरपि वाणी।
राष्ट्रकुलानां धर्मधराणां ज्ञानवतां कल्याणी॥

दिव्यगीतायाः इमं सन्देशसारं श्रूयताम्।
कर्मभोगो निश्चितः सत्कर्मणा पथि गम्यताम्॥
गेहे गेहे------------- ॥ १ ॥

दिव्यभारतवर्षमेतत् लोककल्याणे रतम्।
धर्ममोक्षार्थाभिकामानां प्रयासे प्रेरितम्॥
गेहे गेहे------------- ॥ २ ॥

भ्रातृभावो दृष्यतामिह भारतीये जीवने।
सन्तु सर्वे प्राणिनः सुखिनः सदा संवर्धने॥
गेहे गेहे-------------- ॥ ३ ॥

हिन्दुदेशे वीरपुत्रैः पुण्यपुरूषैर्भूयताम्।
न्याय-करूणा-प्रेम-ममता-सत्कथासंगीयताम्॥
गेहे गेहे--------------- ॥ ४ ॥

—आचार्य राधाकृष्ण मनोड़ी

अवनितलं पुनरवतीर्णा स्यात्।

अवनितलं पुनरवतीर्णा स्यात् संस्कृतगंगाधारा,
धीरभगीरथवंशोऽस्माकं वयं तु कृतनिर्धाराः,
निपततु पण्डितहरशिरसि प्रवहतु नित्यमिदं वचसि,
प्रविशतु वैयाकरणमुख पुनरपि वहतात् जनमनासि,
पुत्रसहस्रं समुद्धतं स्यात् यान्तु च जन्मविकाराः ॥ १ ॥

ग्रामं ग्रामं गच्छामः संस्कृतशिक्षां यच्छामः,
सर्वेषामपि तृप्तिहितार्थंस्वक्लेशं न हि गणयेम,
कृते प्रयत्ने किं न लभते एवं सन्ति विचाराः ॥ २ ॥

या माता संस्कृतिमूला यस्या व्याप्तिः सुविशाला,
वाङ्मयरूपा सा भवतु लसतु चिरं सा वाङ्माला,
सुरवाणीं जनवाणीं कर्तुं यतामहे कृतिशूराः ॥ ३ ॥

–डॉ. नारायणभट्ट

जय जय हे भगवति

जय जय हे भगवति सुरभारति तव चरणौ प्रणमामः।
नादब्रह्ममयि जय वागीश्वरि शरणं ते गच्छामः
त्वमसि शरण्या त्रिभुवनधन्या वन्दित-सुर-मुनि-चरणा
नवरसमधुरा कवितामुखरा स्मित-रुचि-रुचिराभरणा॥
जय जय हे.........................(१)

आसीना भव मानसहंसे कुन्द-तुहिन-शशि धवले
हर जडतां कुरु बुद्धिविकासं सित पंकज तनु विमले॥
जय जय.............................(२)

ललितकलामयि ज्ञानविभामयि वीणा-पुस्तक-धारिणि
मतिरास्तां नःतव पदकमले अयि कुण्ठाविषहारिणि
जय जय हे.........................(३)

—डॉ नारायणभट्ट

प्रेरणा-गीतम्

प्राप्य मानवीयजन्म पुण्यकर्मसंचयेन।
दीनदु:खिणेन संयतस्व जीवनाय॥

सत्पथानुवर्तनेन भव्यभावभावनेन।
लोकशंप्रसारणेन संयतस्व जीवनाय॥

दैन्यभावभंजनेन धैर्यधर्मधारणेन।
वीरतासमाश्रयेण संयतस्व जीवनाय॥

जीवनंत्विदंमुधेति पामरा जना वदन्ति।
नैव तत्तथा ततोऽत्र संयतस्व जीवनाय॥

नमामो वयम्

प्राप्तुमेवात्र राष्ट्रं निजं भारतं
मुक्तये पारतन्त्रयात् प्रचण्डे रणे ।
देशभक्ता: हताश्चाहता: कोटिश–
स्तान् समस्तान् प्रवीरान् नमामोवयम् ॥ १ ॥

वीरवीरेषु राणाशिवौ मंगलो,
वीर दामोदरो लोकमान्यस्तथा ।
मालवीयश्च गांधी बुधो गोखले,
लालपालौ सुभाषो महास्छेखरः ॥ २ ॥

भक्तसिंहं कथं विस्मरामो वयं,
ऊधमंबिस्मिलंबंकिमंगान्धिनम् ।
संख्यया: भूरिशो भूमिमात्रे ददुः,
युद्धभूमौ हसित्वा च प्राणान्निजान् ॥ ३ ॥

भ्रष्टतन्त्रं समुत्पाट्य कुर्मों वयं,
लोकतन्त्रस्य संस्थापनां भारते ।
ज्ञानविज्ञानयो: साधनायां वयं,,
भारतीया: रता: स्मो मुदा प्रेमतः ॥ ४ ॥

वेदवेदान्तवीथ्यां व्रजेयुर्बुधा:,
सन्तु विज्ञानिनो वै समुद्योगिनः ।
राष्ट्रिया: मानवा: लोकसेवारता:,
सन्तु देशे पुश्चास्तु सर्वोदयः ॥ ५ ॥

–ओमकार सिंह त्याग

संस्कृतं बोधकं भारतं भूतले

रत्नगर्भा धरा सुस्मिता श्यामला,
दिव्यतीर्थास्तटाः पर्वताः सिन्धवः ।
निर्झराः वाटिकाश्चात्र देवालयाः,
भव्यमेतत्प्रियं भारतं भूतले ॥ १ ॥
वेदशास्त्राणि साहित्यकाव्यानि वा,
यत्र यच्छन्ति लोकाय सत्प्रेरणम् ।
रम्यरामायणं श्रीमहाभारतं,
राष्ट्रमेतद्वरं भारतं भूतले ॥ २ ॥
यत्र देवी सती शारदा जानकी,
चानुसूया शिवा द्रौपदी पद्मिनी ।
सन्ति सर्वा इमाः वत्सलाः मातरः,
शक्तियुक्तं शिव भारतं भूतले ॥ ३ ॥
रामकृष्णौ हरी वर्धमानो जिनो,
गौतमः शंकरः पाणिनिर्नानकः ।
श्री दयानन्द साधुश्च देशे-भवन,
देशिकानामिदं भारतं भूतले ॥ ४ ॥
भारतीयाः स्वभावेन शान्तिप्रियाः,
ज्ञानविज्ञानसेवारताः कर्मठाः ।
मानवी भावना भासते संस्कृतौ,
सत्यसंशोधकं भारतं भूतले ॥ ५ ॥

–आचार्य राधाकृष्ण मनोडी

भाति में भारतम्

भाति में भारतम्, भाति में भारतम्।

भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।। ध्रुवकम्।।

मानवामानितं दानवाबाधितं

निर्जराराधितं सज्जनासाधितम्।

पण्डितैः पूजितं पक्षिभिः कूजितं

भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।। (१)

यस्य संदृश्य संदृश्य शोभा नवा

यस्य संस्मृत्य संस्मृत्य गाथा नवाः।

रोमहर्षो नृणां जायते वै सतां

भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।। (२)

यच्च विश्रामभूमिर्मतं प्राणिनां

यस्य चित्त प्रभृतोऽवकाशस्तथा।

यत्र चागत्य गन्तुं न कोऽपीच्छुको

भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।। (३)

पण्डितैर्योद्धभिर्वाणिजैः कार्मिकैः

शस्त्रिभिः शास्त्रिभिवर्णिभिगेहिभिः।

वानप्रस्थैश्च संन्यासिभिर्मण्डितं

भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।। (४)

सम्पूर्णविश्वरत्नम्

(सारे जहां से अच्छा)

सम्पूर्ण विश्वरत्नं, खलु भारतं स्वकीयम्, स्वकीयम्

सम्पूर्ण विश्वरत्नं।

पुष्पं वयं तु सर्वे, देशश्च वाटिकेयम्।

सम्पूर्ण विश्वरत्नं, खलु भारतं स्वकीयम्, स्वकीयम्।

सर्वोच्च–पर्वतो यो, गगनस्य भाल–चुम्बी।

सर्वोच्च–पर्वतो यो, गगनस्य भाल चुम्बी

सः सैनिकः सुवीरः प्रहरी च स स्वकीयः स्वकीयः।(१)

क्रोडे सहस्रधाराः, प्रवहन्ति यस्य नद्यः।

क्रोडे सहस्रधाराः, प्रवहन्ति यस्य नद्यः।

उदयानमाभिः पोष्यं, उदयानमाभिः पोष्यं

भुवि गौरवम् स्वी स्वकीयम् स्वकीयम्।(२)

धर्मस्य नास्ति शिक्षा, कटुता मिथो विधेया।

धर्मस्य नास्ति शिक्षा, कटुता मिथो विधेया।

एकोवयं, एकोवयं एकोवयं तु देशः,

खलु भारतं स्वकीयम्, स्वकीयम्। (३)

सम्पूर्ण विश्वरत्नं, खलु भारतं स्वकीयम्, स्वकीयम्।

सम्पूर्ण विश्वरत्नं, खलु भारतं स्वकीयम्, स्वकीयम्।

-- जितेन्द्र कुमार

विस्मृतभेदाः सन्तः

विस्मृतभेदाः सन्तो निर्मला भावापन्नः
एकीभावं हृदयारूढं सततं कुर्वन्तुऽऽ
भो भोः, सततं कुर्वन्तुऽ ।।

पूर्वज–मूनिजन–कविजन–वांछा सर्वेषामैक्यं,
सुखिनः सर्वे सन्त्विति गानं तेषां बहुहृद्यम् ।
भाषा–धनमत–जाति–विभेदः हृदये मा भवतु
दुःखित–दीन–जनाननुपातुं हस्ताः प्रसरन्तुऽऽ
भो भोः, हस्ताः प्रसरन्तुऽ ।। (१)

गंगा–तुंगा–कावेरी–जलमस्माकं मत्वा
कृतसंकल्पाः कार्यं कर्तुम् आलस्यं हित्वा ।
सुवर्णपुष्पां पृथिवीमेतां क्रष्टुम् आयान्तु
प्रवहतु कामं स्वेदस्रोतः धैर्यं मा जहतुऽ
भो भोः, धैर्यं मा जहतुऽ ।। (२)

घर्षण–लुण्ठन–वंचन–हननं प्रलयं संयातु
स्नेहस्रोतः प्रवहतु भ्रातुर्भावो हृदि लसतु ।
अनिलः सलिलम् अनलः सर्वं सर्वेषामेकम्
प्रवहति रक्तमभक्तं मातुः भेदो मा भवतुऽ
भो भोः, भेदो मा भवतुऽ ।। (३)

–श्री जि. महाबलेश्वरभट्ट

इतिहासं लेखिष्यामः

वयं निहत्य स्वार्थतमिस्रामुषः प्रभामानेष्यामः।
जाग्रद्यौवनवद्यूनां वयमितिहासं लेखिष्यामः।।

चितमस्माभिर्वैवस्वतमनुचारुचरित शिक्षावृत्तम्।
दायरूपमस्माभिः प्राप्तं हिमालयोत्तुगं शिखरम्।
उच्चादर्शान् वयं नयामो नभस्तलाद् मेदिनीतलम्
वयं दर्शयामो गंगाया अजकमण्डलो खतरणम्।।
वयमितिहासविनिर्मातारः स्वयमितिवृत्तं बोभूमः।
जाग्रद्यौवनवद् यूनां वयमितिहासं लेखिष्यामः।।१॥

वयं शैशवे केसरिदन्तान् गणयित्वा बहुव्यहसाम
शूर्पणखाया उर्वश्याश्च वयं न पाशे ह्यपताम।
वयं वसिष्ठप्रतिनिधि शिष्या म्रियामहे नह्यासक्ताः
अग्रजचरणपादुकारक्ता निःस्वार्था संस्कृतिभक्ताः।।
औरंगीयां भ्रातृघातिनीं नीतिं वयमपनेष्यामः।
जाग्रद्यौवनवद्यूनां वयमितिहासं लेखिष्यामः।।२॥

सागरवक्षसि पाषाणानां तारणमस्माकं चरितम्
पादत्रितये कृतमस्माभि र्विश्वधराया विक्रमणम्।
दुराचारिदुःशासनशोणित पातारो भारतवीराः
शरणागतरक्षणे सक्षणा अस्मच्छूरा हम्मीराः।।
वयं हुतात्मानो बलिवेद्या बलिपरम्परां रक्षामः।
जाग्रद्यौवनवद्यूनां वयमितिहासं लेखिष्यामः।।३॥

वागीशः दिनकर

वीरताया धरा

राष्ट्ररक्षाविधौ यास्ति काष्ठा परा
वन्द्यते सा मया वीरताया धरा,

स्वाभिमानादृते नास्ति किञ्चित्प्रियं देशसेवाविधौ दीयते जीवनम्
गौरवायैव देशस्य यैरर्प्यते स्वं मनः, स्वा तनुः स्वं धनं सन्ततम्।

वीरपुत्रप्रसूः धीरता निर्भरा
वन्द्यते सा मया वीरताया धरा

यत्र राणाप्रतापस्य पादध्वनिः मातृभूः वक्षसि स्पन्दते सर्वदा
यत्र हम्मीरदेवस्य शस्त्रच्छटा दिक्षु विद्योतते सर्वदा मोददा

शत्रुविध्वंसयज्ञेषु बद्धादरा
वन्द्यते सा मया शूरताया धरा,

यत्र भक्तिस्वरूपा हि मीरा पपौ कृष्णप्रेमामृतं, ब्रह्मसायुज्यदम्
पाययन्ती सुधा भक्तिसङ्गीतिभिः पावयन्ती स्थिता या हि भूमण्डलम्

श्रीहरेः प्रेमपीयूषपाने रता
वन्द्यते सा मया भक्तिपूर्णाधरा

संस्कृतिर्भारतीया सदा पाल्यते संस्कृतं जीवनञ्चापि संधार्यते
धर्मकर्मान्विता यत्समाजप्रथा विश्रुता विश्वमञ्चे यदीया कथा

– डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'

अहं स्वतंत्रता भणामि

अहं स्वतंत्रता भणामि मद्वचो निशम्यताम्।
निधाय मानसे च तद् यथोचितं विधीयताम्।।
अहं स्वतन्त्रता भणामि...... ।।

मदर्चनाकृते शिरांस्युपायनीकृतानि यैः,
धनं वपुस्तथा मनः सहर्षमर्पितानि यैः।
अवापुरात्मवक्षसि ज्वलद्भुशुण्डिगोलिकाः,
गतास्त एव मे जना सदैव वन्दनीयताम्।।
अहं स्वतन्त्रता भणामि...... ।।

भवद्भिरन्तरिक्षगा जनाः स्वदेश ईक्षिताः,
भवद्भिराततायिनाशकारिणोऽपि दीक्षिताः।
कृतं भवद्भिरेशियाद्व्यशीतिखेलयोजनम्,
तदेतदर्थमद्य मे शुभेहितं प्रगृह्यताम्।।
अहं स्वतन्त्रता भणामि...... ।।

भवद्भिरद्य दृश्यते यथार्थिकी समुन्नतिः,
भवद्भिरद्य दृश्यते नवा च या विनिर्मितिः।
भवद्भिरद्य यः स्वतन्त्रतारसो निपीयते,
तदेतदात्मजीवने चिरं चिराय धार्यताम्।।
अहं स्वतन्त्रता भणामि...... ।।

शुभाः हि कामनाः भवत्कृते समर्पयाम्यहम्,
समुन्नतिं सुखं च वः सदैव चिन्तयाम्यहम्।
परन्तु वर्तमानया विचित्रकाललीलया,
मनाग् विचिन्तिता यदेव वच्मि तन्निशम्यताम्।।
अहं स्वतन्त्रता भणामि...... ।।

– डॉ. रमाकान्त शुक्ल

एकं सद् बहुधा विलोक्यते भारतम्!

एकं सद् बहुधा विलोक्यते भारतम्।
बहुधा सच्चैकं विराजते भारतम्।
एकमखण्डभिन्नमस्ति मे भारतम्।
रम्यमस्ति सुरवन्द्यमस्ति मे भारतम्।।१।।

एकं सद्.......।

यदि पादेऽस्य कदापि निविशते कण्टकम्
निखिलतनौ पीडनं भवति मर्मान्तकम्।
यदि वेदना शिरसि समुदेति सदा ध्रुवं
व्यथते सकलतनौ मे निखिलं भारतम्।।२।।

एकं सद्.......।

भिन्नमस्तु भाषाभूषासु पदे पदे
भिन्नमस्तु लोकाचारेषु पदे पदे।
भिन्नमस्तु पूजापद्धतिषु पदे पदे
आत्मन्येकमभिन्नमस्ति मे भारतम्।।३।।

एकं सद्.......।

कोटिकोटिजनताचेतस्सु विराजितम्।
नित्यनवीनोत्सवपर्वावलि - राजितम्।
विश्वबन्धुता - जिजीविषा - विस्तारकम्।
जगतो हृदयं जयति जगति मे भारतम्।।४।।

एकं सद्.......।

वीक्ष्य समृद्धि यन्त्रोद्योगनां भृशम्।
वीक्ष्यं समृद्धिं कृषिसम्पत्त्या वा भृशम्।
वीक्ष्य समृद्धिं ज्ञानकलादीनां भृशम्,
मोमुदीति मनसा निखिलं मे भारतम्।।५।।

एकं सद्.......।

– डॉ. रमाकान्त शुक्ल

मदीयकविते! कुरुष्व गानम्

सरस्वतीपादपद्मसेवा
यदीयामास्ते परं हि लक्ष्यम्।
बुधाग्रगाणामतन्द्रितानां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम्॥ १॥

सुखं धनं स्नेहबन्धनानि
स्वदेशसौख्याय ये त्यजन्ति।
हुतात्मनां नित्यमेव तेषां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम्॥ २॥

परोपकारव्रतं पवित्रं
सदैव ये पालयन्ति हृष्टाः।
सुपूजितानां नृणां हि तेषां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम्॥ ३॥

रिपोः करान्मोचयाम्बभूवुः
स्वमातरं भारतावनिं ये।
विशिष्य तेषां नृणां समेषां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम्॥ ४॥

मनुष्यतां रक्षितुं स्वयत्नै-
रनुक्षणं शोधतत्पराणाम्।
प्रबुधवैज्ञानिकव्रजानां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम्॥ ५॥

– डॉ. रमाकान्त शुक्ल

BHARAT VIKAS PARISHAD

National Sanskrit Group Song and Folk Song Competition
ENTRY-FORM

NAME OF STATE..

NAME OF THE SCHOOL/..

FULL POSTAL ADDRESS...

....

PHONES ....

Team Participating in Folk Competition...Yes/No

No. of Participants : Boys:...... Girls:...... No. of Instrumentalists ...... Total:........

No. of Teachers.................... Parishad Member (One) and Other No..............

The above description is true to my knowledge. We have fully read the rules and regulations and other details of the National Sanskrit Group Song Competition and we-shall abide by them.

The group will be headed by Sir/Smt./Kumari..

and he/she will be responsible for all the activities, discipline and decorum.

We have no objection if Bharat Vikas Parishad uses our Song or Composition and our Group will also be ready to participate in any cultural programme organised by Bharat Vikas Parishad in future.

A sum of Rs. 500/- for National level entry is being sent herewith by Demand Draft No..................... dated......................... in favour of 'Bharat Vikas Parishad' payable at..................... (where organised).

Dated : ....

Signature of Principal
with Institution Stamp

List of Participants as per the following details (duly signed by the Principal) is enclosed.

Sl. No.	Name of the student	Father's Name	Class
....	....	....	....
....	....	....	....

Note: The Entry from shall only be accepted throgh State President/General Secretary/SGSC Convenor of the Parishad.

भारत विकास परिषद्

राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान एवं लोकगीत प्रतियोगिता

प्रवेश–पत्र

प्रान्त का नाम: --

विद्यालय का नाम: --

प्राचार्य/प्राचार्या का नाम: --

पत्राचार का पूरा पता: --

दूरभाष --

लोकगीत प्रतियोगिता में टोली भाग लेगी। ------------------------ हाँ/नहीं

प्रतिभागियों की संख्या : बालक ------ बालिकाएं ------ साजिन्दों की संख्या ------ कुल ------

अध्यापकों की संख्या ------------ परिषद सदस्य (एक) एवं अन्य संख्या ------------

उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी से सत्य है। हमने राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान समूहगान प्रतियोगिता के विवरण और नियम अच्छी तरह से पढ़ लिये हैं और हम उनका पालन करेंगे।
समूह का मार्गदर्शन श्री/श्रीमती/कुमारी ------------------------ करेंगे/करेंगी और वह सभी कार्यकलापों, अनुशासन और मर्यादा के प्रति उत्तरदायि होंगे।
यदि भारत विकास परिषद हमारे गीत व धुन का उपयोग करती है तो हमें इंसमें कोई आपत्ति नहीं है तथा भविष्य में भीं भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए हमारा समूह सदा तैयार रहेगा।
राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश हेतु शुल्क 500/– रुपये का ड्राफ्ट नं. ------------------------
दिनांक : ------------------------
भारत विकास परिषद् ------------------------ (आयोजन स्थान) के नाम से संलग्न है।
दिनांक ------------ प्राचार्य के हस्ताक्षर (मोहर सहित)

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगियों की सूची निम्न विवरण के अनुसार अध्यापक/प्राचार्य के हस्ताक्षर (मोहर सहित) लगा कर पृथक पत्र पर भेजें।

क्रमांक	विद्यार्थी का नाम	पिता का नाम	कक्षा
------------	------------	------------	------------
------------	------------	------------	------------

टिप्पणी: प्रवेश–पत्र परिषद् के प्राप्त अध्यक्ष/महासचिव/सममूहगान संयोजक के माध्यम से ही स्वीकार किया जायेगा।

राष्ट्रदेवो भव

राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान एवं लोकगीत प्रतियोगिता

भारत विकास परिषद्,.................. शाखा (प्रांत)

दिनांक 20

प्रांतस्तरीय गुणवत्ता प्रशस्ति पत्रम्

प्रमाणीक्रियते यत् .... सुपुत्र/सुपुत्री ....

स्वकीयस्य .... विद्यालय/महाविद्यालय दलेन सह

राष्ट्रीय संस्कृत समूहगान एवं लोकगीत प्रतियोगितायां भागं ग्रहीतवान्/ग्रहीतवती।

एतस्यां प्रतियोगितायां एषः दलः .... स्थानं लब्धवान्।

....	....	....	....
प्रांताध्यक्षः	प्रांतसचिवः	प्रांतसंयोजकः	कार्यक्रम संयोजकः

राष्ट्रदेवो भव

राष्ट्रीय संस्कृतसमूहगान एवं लोकगीत प्रतियोगिता

भारत विकास परिषद्,........... शाखा (प्रांत)

दिनांक 20

शाखास्तरीयगुणवत्ताप्रशस्तिपत्रम्

प्रमाणीक्रियते यत् .... सुपुत्र/सुपुत्री ....

स्वकीयस्य .... विद्यालय/महाविद्यालय दलेन

सह राष्ट्रीय संस्कृतसमूहगान एवं लोकगीत प्रतियोगितायां भागं ग्रहीतवान्/ग्रहीतवती।

एतस्यां प्रतियोगितायाम् एषः दलः .... स्थानं लब्धवान्।

....	....	....	....
प्रांताध्यक्षः	प्रांतसचिवः	प्रांतसंयोजकः	कार्यक्रम संयोजकः

छठी अखिल भारतीय संस्कृत समूह गान प्रतियोगिता 2010

संस्कृत गीत की विजेता टीम

लोक गीत की विजेता टीम